लोक में नारी–जीवन का यथार्थ :

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों के साक्ष्य से

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ के कला संकाय के अंतर्गत हिन्दी विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा

सन्–2016

शोधार्थी

जानकी चौधरी

शास.वि.या.ता.स्नात.स्व.

महाविद्यालय, दुर्ग, (छ.ग.)

शोधकेन्द्र

शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी

महाविद्यालय, दुर्ग, (छ.ग.)

लोक में नारी–जीवन का यथार्थ :

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों के साक्ष्य से

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर छत्तीसगढ़ के कला संकाय के अंतर्गत हिन्दी विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा

सन्–2016

शोधनिर्देशक
डॉ. सियाराम शर्मा
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास. दानवीर तुलाराम
महाविद्यालय,उतई,
जिला – दुर्ग, (छ.ग.)

सह – शोधनिर्देशक
डॉ. अभिनेष सुराना
प्राध्यापक हिन्दी विभाग
शास. वि.या.ता.स्नात.स्व.महा.,
दुर्ग ,(छ.ग.)

शोधार्थी
जानकी चौधरी
शास.वि.या.ता.स्नात.स्व.
महा., दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य
डॉ. एस.के.राजपूत
शास. वि.या.ता.स्नात.स्व.
महाविद्यालय दुर्ग, (छ.ग.)

शोधकेन्द्र

शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

शोधप्रबंध का शीर्षक :– लोक में नारी–जीवन का यथार्थ : छत्तीसगढ़ी लोकगीतों के साक्ष्य से

प्रस्तावना :–

भारतीय संस्कृति, साहित्य और समाज में स्त्री की स्थिति दुविधाग्रस्त और अन्तर्विरोधों से पूर्ण रही है। एक तरफ शास्त्रों में यह कहा गया है कि जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहॉ देवता निवास करते हैं। वह देवी है। शक्ति स्वरूपा है। जननी, सृष्टि की मूलाधार है। वहीं दूसरी तरफ इसी स्त्री को कभी भी पुरूष की बराबरी का दर्जा नहीं दिया गया। उसे अबला बनाकर पुरूष की अनुगामिनी बना दिया गया। उसकी स्वतंत्रता,आजादी और स्वतंत्र व्यक्तित्व की हमेशा उपेक्षा की गई । उसे माया,पुरूष की साधना के मार्ग में अवरोध,सारे पापों की जड़ और अवगुणों की खान तक कहा गया। वर्चस्ववादी, धर्म, साहित्य, संस्कृति और समाजिक परम्पराओं के माध्यम से स्त्री का मानसिक अनुकूलन किया गया। उसे वस्तु, पुरूष की सम्पति और भोग्या में तब्दील कर दिया गया।

भारतीय नारी की स्थिति उतार–चढ़ाव की रही है। कभी उसे सम्मान का स्वर्णिम शिखर मिला तो कभी पतन की गर्त। सम्मान की पराकाष्ठा यह है कि श्री स्वंभू ने गंगा को मस्तक में सुशोभित कर उसे अनुगृहीत किया वहीं दूसरी तरफ ताड़न का अधिकारी भी बताया गया।

स्त्री प्राकृतिक रूप में सहज, सौम्य, सहनशील और बुद्धिमति होती है। वह माता, बहन, पत्नी आदि रूपों में परिवार को संस्कारित करने के साथ–साथ देश और समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। विडंबना है कि, संपूर्ण विश्व में नारियों पर अत्याचार हुआ है। कभी सीता को गर्भावस्था में घर से निष्कासित किया गया, द्रोपदी का चीरहरण तथा देवी आहिल्या को पाषाण में रूपातंरित होना पड़ा। जर,जोरू, गुलाम का एकतरफा आरोप स्त्री पर लगा दिया गया। मुगलकाल में स्थिति भयावह हो गई। स्त्रियाँ भोग्या के रूप में एवं संतान जनन का माध्यम भर रह गई। भोगविलास तथा ऐश–आराम की सामग्री रह गई। फलतः बेटी जन्म पर शोक, बालविवाह, पर्दाप्रथा, सतीप्रथा, जौहर आदि कुरीतियों का प्रार्दुभाव हुआ। वह शारीरिक एंव मानसिक प्रताड़ना का ग्रास बनी।

समय परिवर्तन के कारण 19वीं एवं 20वीं सदी नारी के लिए उत्थान का युग रहा। आधुनिकता के साथ उसकी स्थिति ने करवट बदली। शासन की बागडोर,

राजनीति, आर्थिक, सामाजिक प्रस्थिति में बराबर की जिम्मेदारी आज नारी के कंधो पर है। कंधे से कंधा मिलाकर आजादी के आंदोलन में, समाजिक परिवर्तन, शिक्षा के अवसर प्राप्त करने में,खेत–खलिहान में अथक पारिश्रमिक कार्य, जंगल–खदान और कारखानों में, साहित्य एवं कला के विविध विधाओं में वह आगे बढ रही है।

शास्त्र प्रायः वर्चस्वादी सत्ता के अनुरूप रचे और गढे गए। उसके द्वारा हमेशा शासक वर्ग के विचारों को वैधता प्रदान की जाती रही। शास्त्रों के निर्माण में ज्यादातर भागीदारी पुरूषों की रही और वे पुरूष प्रभुत्व की अभिव्यक्ति के साथ–साथ उसे जारी रखने के माध्यम भी बने रहे। घर–परिवार के साथ लोकजीवन में स्त्रियां निरंतर सक्रिय रही। लोकगीतों,लोककथाओं की प्रवाहित अजस्र धारा में वह अपने जीवन के सुख–दुःख, हर्ष–विषाद, यातना और पीड़ा को अभिव्यक्त करती रही। लोकगीतों में उसने अपने मन, हृदय और आत्मा की अनुभूति को खुलकर अभिव्यक्ति दी। अपनी आशाओं, आकांक्षाओं और सपनों को आकार दिया। ये लोकगीत हमारे समाज में स्त्री वास्तविकता को समझने के बेहतर माध्यम हो सकते हैं।

भूमण्डलीकरण के आक्रामक विस्तार के साथ बहुत सारे लोक रूपों का निरंतर ह्रास हो रहा है। वे नष्ट होने के कगार पर खड़े हैं। इन्हें बचाये रख पाना अब बहुत मुश्किल है। ऐसे में लोक–साहित्य के विविध रूपों में सुरक्षित जीवन का विवेचन, विश्लेषण बहुत जरूरी और प्रांसगिक हैं।

समस्त भारत में छत्तीसगढ लोक संस्कृति की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहां अभी तक बहुत सारे लोक रूप प्रायः सुरक्षित हैं। अतः इनके विवेचन– विश्लेषण की जरूरत है। छत्तीसगढ अंचल की छत्तीसगढी भाषा में प्रचलित लोकगीतों के माध्यम से स्त्री– जीवन के यथार्थ की पहचान, व्याख्या और विश्लेषण हमारे शोध कार्य का मूल उद्देश्य है।

प्रस्तावित शोध कार्य को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त कर पूर्ण किया जायेगाः–

प्रस्तावना :– 1. विषय परिचय

2. विषय की व्याप्ति और सीमा

3. अध्ययन की परिकल्पना

4. पूर्वानुसन्धान

5. उद्‌देश्य

6. महत्व

अध्याय – 1. लोकजीवन और यथार्थ

1.1 लोक और श्रम की संस्कृति

1.2 लोक का सांस्कृतिक अभिलक्षण

1.3 छत्तीसगढ़ी लोकजीवन और उसका वैशिष्ट्य

1.4 लोक जीवन : बदलाव की दिशाएँ

अध्याय – 2. नारी जीवन का यथार्थ

2.1 शास्त्र और नारी–जीवन

2.2 लोक मे नारी–जीवन

अध्याय – 3. छत्तीसगढ़ी लोक–साहित्य

3.1 छत्तीसगढ़ी लोकवृत्त :

3.2 लोकगीत और लोक जीवन

3.3 लोकगीत और उनका विषय–वैविध्य

अध्याय – 4. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में नारी–जीवन का यथार्थ

4.1 श्रम और कर्म : नारी की भूमिका

4.2 पुरूष–प्रधान सामाजिक दायरे में नारी

4.3 संस्कार, परिवार और नारी

4.4 ग्राम्य जीवन की सामुदायिकता और नारी

4.5 धार्मिक जीवन में नारी की सहभगिता

4.6 पर्व, त्यौहार और नारी

4.7 लोक कलाएँ और नारी

4.8 प्रेम और सौंदर्य की संवेदना

4.9 प्रकृति और नारी

4.10 खेल, मनोरंजन और नारी

4.11 सामाजिक रूढ़ि, अंधविश्वास और नारी

4.12 नारी जीवन की त्रासदी और संघर्ष

4.13 सामाजिक आंदोलन और नारी

4.14 नारी जीवन के अन्य पहलू

अध्याय – 5. छत्तीसगढ़ी नारी–जीवन का स्वरूप और लोक संवेदना

5.1 छत्तीसगढ़ की नारी जीवन परंम्परा और परिवर्तन के आयाम

5.2 लोकगीतों में नारी की विविध छवियॉ

अध्याय – 6. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में नारी जीवन के यथार्थ का कलात्मक पक्ष

6.1 भाषा की रचनात्मकता

6.2 बिम्ब

6.3 प्रतीक

6.4 लय

उपसंहार

सम्बधित क्षेत्र में पूर्व में किए गये कार्य की संक्षिप्त समीक्षा :–

छत्तीसगढ़ अंचल में लोकगीत रग–रग में प्रवाहमान है। लोकगीत मानव के हृदय में उठने वाले भावों की सहज लोक स्वीकृत अभिव्यक्ति है। लोकगीत की प्रवृत्ति मौखिक होती है। वह कंठ से कंठ तक की दूरी तय कर सजीव रूप धारण करती है। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का उद्‌भव आदिकाल से है। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का संकलन एवं लिपिबद्ध करने का आरंभिक प्रयास श्री दानेश्वर शर्मा ने 1950–1960 दशक में किया। इसके बाद लोकगीतों पर शोध, संकलन एवं लिपिबद्ध करने के अनेक कार्य हुए हैं।

- नायडू, हनुमंत. छत्तीसगढ़ी लोकगीत. विश्वभारती प्रकाशन. नागपुर 1989.
- शुक्ला, निशा. देवार गीतों का लोकतात्विक अध्ययन. 1986.
- शर्मा, निरूपमा. छत्तीसगढ़ का ददरिया. छत्तीसगढ़ महिला साहित्यकला एवं विकास परिषद निरूपमा जगन्नाथ, रायपुर, 2010.
- केरकट्‌टा, ज्योति. छत्तीसगढ़ के लोकसाहित्य में सुआगीत.2009.
- मिश्रा, प्रीती. हिन्दु धर्म में स्त्रियों की स्थिति. आदित्य पब्लिकेशन. 2001.

- दामा डे, ज्योति. समकालीन स्त्री आत्मकथाओं में बिन्दु बी.सी .नारी विमर्श के परिपेक्ष्य में शिवानी के उपन्यासों का अध्ययन, 2015.
- सिंग, मुक्तयार. हिन्दी में स्त्री विमर्श की परम्परा और महादेवी वर्मा का साहित्य,2015.
- ज्ञानेश्वरी,सी. नारी जागरण के परिपेक्ष्य में रजनी पानीक्कर और चंद्रकांता के उपन्यास का विश्लेषनात्मक अध्ययन. 2013.

अतः यह कहना उचित नहीं होगा कि यह कार्य उपर्युक्त पुस्तकों का दुहराव है बल्कि यह वास्तविक और परम्परागत कार्यों से हट कर है। इस तरह पूर्व में हुए शोध कार्य दिशा निर्देश में सहायक होगा। इनसे कुछ हद तक शोधकार्य में मदद ली जा सकती है।

प्रस्तावित शोधकार्य का उद्देश्य :–

1. लोक में नारी–जीवन के यथार्थ पृष्ठभूमि को जानना व समझना।
2. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में नारी की भूमिका को समझना।
3. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों और उनका विषय वैविध्य पर प्रकाश डालना।
4. नारी जीवन की त्रासदी एवं संघर्ष को जानने का उदेश्य।
5. परिवार, समाज उत्थान में जन चेतना के प्रेरक रूप नारी को प्रदर्शित करना एवं नारी को सजग एवं सबल बनाने का उद्देश्य।

सम्बधित क्षेत्र में किये गये महत्वपूर्ण कार्य :–

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय एवं देश के अन्य विश्वविद्यालय में मेरी जानकारी में "लोक में नारी–जीवन का यथार्थ : छत्तीसगढी लोकगीतों के साक्ष्य से" विषय पर कोई शोधकार्य नहीं हुआ है और न ही कोई पुस्तक प्रकाशित हुई है। ज्योति केरकट्टा ने सिर्फ सुवागीत को अपने अध्ययन का विषय बनाया है। स्त्री का यथार्थ उस कार्य से जुडा नहीं है। मेरे अध्ययन में सुवागीत के साथ अन्य लोक गीत भी शामिल हैं। डॉ. हनुमंत नायडू और निशा शुक्ला के संकलन से मुझे शोध में सहायता मिल सकती है पर विश्लेषण और व्याख्या मेरा अपना होगा। हाँ,स्त्री विमर्श से सम्बधित राधाकुमार और चारू गुप्ता की कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें अवश्य प्रकाशित है पर वह शोध का मूल विषय नहीं है।

शोधकार्य के लिए प्रस्तावित शोध प्रविधि :–

समस्त शोधकार्य वैज्ञानिक दृष्टि पर आधारित होता है। इस शोध कार्य में भी वैज्ञानिक प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। अध्ययन के दौरान शोध–प्रविधि का विज्ञान–सम्मत दृष्टि से निम्नलिखित पहलुओं को ध्यान में रखा जाएगा।

1. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का संकलन।
2. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का चयन।
3. व्याख्या विश्लेषण प्रविधि।
4. साक्षात्कार प्रविधि।
5. साहित्य और कला की समाज शास्त्रीय प्रविधि।

प्रस्तावित शोधकार्य का आशातीत परिणाम :–

यह विषय सामाजिक दृष्टि से अहम है। छत्तीसगढ़ अंचल में विविध लोकगीतों का भंडार है। लोकगीतों का संकलन और उसमें नारी–जीवन के यथार्थ को ढूँढना अहम कार्य हैं। इस शोध में सम्पूर्ण भारत के परिपेक्ष्य में छत्तीसगढ़ के स्त्रियों की,छत्तीसगढी लोकगीतों के माध्यम से स्थिति व दशा प्रस्तुत किया जायेगा। इससे छत्तीसगढी समाज में स्त्री की वास्तविक स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। छत्तीसगढ में स्त्रियों की स्थिति में सुधार और परिवर्तन के लिए भी इस शोध के निष्कर्षो का उपयोग किया जा सकता है। इस शोध का सांस्कृतिक महत्व के साथ–साथ समाजशास्त्रीय महत्व भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. शर्मा, मंजू. बीसवीं शताब्दी का छत्तीसगढी साहित्य.इलाहाबाद : प्रभाश्री विश्वभारती प्रकाशन, 2013.
2. यादव, पीसी लाल. छत्तीसगढी संस्कार गीत. गंडईः दूध मोंगरा, 2009.
3. चंदेल, गोरे लाल. छत्तीसगढ ददरिया का तात्विक अनुशीलन. राजनाँदगाँव : जे.पी. गुप्ता भा.प्र.से.
4. तिवारी, विवेक. छत्तीसगढी लोकगीत दशा एवं दिशा. दिल्ली : मित्तल एण्ड संस, 2016.
5 अडिल.सत्यभामा. छत्तीसगढी भाषा और साहित्य. रायपुर : विकल्प प्रकाशन, 2002

.

6. नायडू, .हनुमंत. छत्तीसगढी लोकगीत. नागपुर : विश्वभारती प्रकाशन,1989.
7. शर्मा, निरूपमा. छत्तीसगढ का ददरियॉ. रायपुर : छत्तीसगढ़ महिला साहित्य कला एवं विकास परिषद निरूपम जगन्नाथ, 2010.
8. कसार, जमुना प्रसाद. "झॉपी" छत्तीसगढ की सांस्कृतिक मंजूषा, दुर्ग : जमुना प्रसाद कसार प्रेम नगर, 2001.
9. शर्मा, पालेश्वर प्रसाद. छ.ग. के तीज त्यौहार और रीति–रिवाज. बिलासपुर : देवदत्त तिवारी, 2004–05.
10. शुक्ल, दयाशंकर. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन.रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2011.
11. भूषण,केयुर. मयागीत. रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2010.
12. कौशल, मुकुंद. मयागीत. रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2010.
13. चौबे, रोशनी. मयारूक–गीत. मांगलिक कार्यो के अवसर पर गाए जाने वाले लोक गीतों का संग्रह. रायपुर : जनचेतना प्रकाशन, 2004.
14. चन्द्राकार .शैलजा. छत्तीसगढ़ी लोकनाट्यों में शास्त्रीय तत्व. दुर्ग : श्री लब्धिसूरि फांउडेशन दुगड़ सदन, 2008.
15. भूषण, केयूर. छत्तीसगढ के नारी रत्न. रायपुर : जनचेतना प्रकाशन, 2005.
16. अग्रवाल,. अनसूया. छत्तीसगढी लोकोक्तियाँ और जनजीवन.दिल्ली : भावना प्रकाशन, 2001.
17. तिवारी, नंद किशोर. छत्तीसगढी साहित्य दशा और दिशा. रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2006.

अप्रकाशित शोधप्रबंध –

1. यदु, राजेन्द्र प्रसाद. छत्तीसगढ़ रावत नाचा के दोहों का अनुशीलन.
2. नेगी, उमा. छत्तीसगढ़ पर्व गीतों का अनुशीलन.
3. शर्मा, निशा. देवार गीतों का लोकतात्विक अध्ययन.
4. अग्रवाल, सुलेखा. छत्तीगढ़ी संस्कार गीतों का अनुशीलन.
5. अग्रवाल, इंद्राणी. छ.ग. के नवरात लोकगीतों का साहित्यक, सांस्कृतिक, समाजशास्त्रीय अध्ययन.
6. मंहत, देवधर. छत्तीसगढ़ी करमा लोक–गीतों का लोकतात्विक अध्ययन.
7. केरकट्टा, ज्योति. छत्तीसगढ़ के लोक साहित्य में सुआगीत.

<u>शोधार्थी के प्रकाशित शोध पत्र का विवरण</u> :–

शोधार्थी का अभी कोई शोधपत्र प्रकाशित नही हुआ है।

शोधनिर्देशक
डॉ. सियाराम शर्मा
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास. दानवीर तुलाराम
महाविद्यालय, उतई,
जिला– दुर्ग ,(छ.ग.)

सह – शोधनिर्देशक
डॉ. अभिनेष सुराना
प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
शास. वि.या.ता.स्नात.स्व.महा.,
दुर्ग, (छ.ग.)

शोधार्थी
जानकी चौधरी
शास. वि.या.ता.स्नात.स्व.
महा.दुर्ग, (छ.ग.)

प्राचार्य
डॉ. एस.के.राजपूत
शास.वि.या.ता.स्नात.स्व.
महाविद्यालय, दुर्ग,(छ.ग.)